रैदास के पद

प्रस्तुति- मीना पटनाइक
कक्षा-9

पद-1

अब कैसे छुटै राम नाम रट लागी।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

शब्दार्थ –रात लागी-आदत लगाना ,जाकी –जिसकी,बास-खुशबू ,समानी- समान, घन-बादल,मोरा-मोर,चितवत-तल्लीन होकर देखना,चकोरा -चकोर पक्षी,बाती-रुई की बाती,जोति-ज्योति,बरे-जलती रहे,सोनहि-सोना,सुहागा-सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला क्षार,दास-सेवक|

व्याख्या - इस पद में कवि ने उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है। एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो वह फिर कभी नहीं छूटता। कवि का कहना है कि यदि भगवान चंदन हैं तो भक्त पानी है। जैसे चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है वैसे ही प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। यदि भगवान बादल हैं तो भक्त किसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। यदि भगवान चाँद हैं तो भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो अपलक चाँद को निहारता रहता है। यदि भगवान दीपक हैं तो भक्त उसकी बाती की तरह है जो दिन रात रोशनी देती रहती है। यदि भगवान मोती हैं तो भक्त धागे के समान है जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं। उसका असर ऐसा होता है जैसे सोने में सुहागा डाला गया हो अर्थात उसकी सुंदरता और भी निखर जाती है।

पद-2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ़रै।
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

शब्दार्थ –लाल-स्वामी,गरीब निबाजू-गरीबों पर दया करने वाला,दुसईआ-स्वामी,छत्र-मुकुट, छोति-छुआछूत,तुही-तुम्ही,ढ़रे-द्रवित होना,निचहु-निम्न वर्ग वाला,ऊच-ऊँचा,काहू- किसी से, हरिजीउ-हरि जी,सभे-सभी,सरे-संभव |

व्याख्या-इस पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं। भगवान गरीबों का उद्धार करने वाले हैं उनके माथे पर छत्र शोभा दे रहा है। भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है। भगवान के छूने से अछूत मनुष्य का भी कल्याण हो जाता है। भगवान अपने प्रताप से किसी नीच को भी ऊँचा बना सकते हैं। जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे।

पाठ्य पुस्तक के प्रश्नोत्तर

- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
- Question 1: पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।
- **उत्तर:** बादल-मोर, चाँद-चकोर, मोती-धागा, दीपक-बाती और सोना-सुहागा
- Question 2: पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे: पानी, समानी, आदि। इस पद में अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।
- **उत्तर:** मोरा-चकोरा, बाती-राती, धागा-सुहागा, दासा-रैदासा
- Question 3: पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए: उदाहरण: दीपक – बाती
- **उत्तर:** चंदन-पानी, घन-बनमोरा, चंद-चकोरा, सोनहि-सुहागा
- Question 4: दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।
- **उत्तर:** दूसरे पद में भगवान को 'गरीब निवाजु' कहा गया है क्योंकि भगवान गरीबों का उद्धार करते हैं।
- Question 5: दूसरे पद की 'जाकी छोती जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ़रै" इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
- **उत्तर:** जिसकी छत परी दुनिया को लगती है उसपर भगवान ही द्रवित हो जाते हैं। अछूत से अभी भी बहुत से लोग बच कर चलते हैं और अपना धर्म भ्रष्ट हो जाने से डरते हैं। अछूत की स्थिति समाज में दयनीय है। ऐसे लोगों का उद्धार भगवान ही करते हैं।

पाठ्य पुस्तक के प्रश्नोत्तर

- Question 6: रैदास ने अपने स्वामी को किन किन नामों से पुकारा है?
- **उत्तर:** गुसईआ (गोसाई), गरीब निवाजु (गरीबों का उद्धार करने वाले)
- Question 7: निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए: मोरा, चंद, बाती, जोति, बरै, राती, छत्रु, छोति, तुहीं, गुसईआ।
- **उत्तर:** मोर, चाँद, बत्ती, ज्योति, जलना, रात, छाता, छूने, तुम्हीं, गोसाई
- नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए:
- Question 1: ज़ाकी अँग-अँग बास समानी।**उत्तर:** भगवान उस चंदन के समान हैं जिसकी सुगंध अंग-अंग में समा जाए।
- Question 2: जैसे चितवन चंद चकोरा।
- **उत्तर:** जैसे चकोर हमेशा चांद को देखता रहता है वैसे ही मैं भी तुम्हें देखते रहना चाहता हूँ।
- Question 3: जाकी जोति बरै दिन राती।
- **उत्तर:** भगवान यदि एक दीपक हैं तो भक्त उस बाती की तरह है जो प्रकाश देने के लिए दिन रात जलती रहती है।
- Question 4: ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
- **उत्तर:** भगवान इतने महान हैं कि वह कुछ भी कर सकते हैं। भगवान के बिना कोई भी व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता।
- Question 5: नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।
- **उत्तर:** भगवान यदि चाहें तो निचली जाति में जन्म लेने वाले व्यक्ति को भी ऊँची श्रेणी दे सकते हैं।

Extra question and ans

1Q-कवि ने स्वयं को पानी मानकर प्रभु को क्या माना है? 'रैदास के पद' के आधार पर लिखिए।

An-कवि ने स्वयं को पानी मानकर प्रभु को चंदन माना है।

2Q-कवि रैदास के स्वामी कौन हैं? वे क्या-क्या कार्य करते हैं?

An-रैदास के स्वामी निराकार प्रभु हैं। वे अपनी असीम कृपा से नीच को भी ऊँच और अछूत को महान बना देते हैं।

3Q-तुम घन बन हम मोरा-ऐसी कवि रैदास ने क्यों कहा है?

An-रैदास अपने प्रभु के अनन्य भक्त हैं, जिन्हें अपने आराध्य को देखने से असीम खुशी मिलती है। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि जिस प्रकार वन में रहने वाला मोर आसमान में घिरे बादलों को देख प्रसन्न हो जाता है, उसी प्रकार कवि भी अपने आराध्य को देखकर प्रसन्न होता है।

4Q-कवि रैदास ने गरीब निवाजु किसे कहा है और क्यों?

An-कवि ने 'गरीब निवाजु' अपने आराध्य प्रभु को कहा है, क्योंकि उन्होंने गरीबों और कमज़ोर समझे जाने वाले और अछूत कहलाने वालों का उद्धार किया है। इससे इन लोगों को समाज में मान-सम्मान और ऊँचा स्थान मिल सकता है।

5Q-द्वारा रचित 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' को प्रतिपाद्य लिखिए।

An-रैदास द्वारा रचित 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' में अपने आराध्य के नाम की रट की आदत न छोड़ पाने के माध्यम से कवि ने अपनी अटूट एवं अनन्य भक्ति भावना प्रकट की है। इसके अलावा उसने चंदन-पानी, दीपक-बाती आदि अनेक उदाहरणों द्वारा उनका सान्निध्य पाने तथा अपने स्वामी के प्रति दास्य भक्ति की स्वीकारोक्ति की है।

Extra Question and Ans

6Q-कवि रैदास ने अपने पद के माध्यम से तत्कालीन समाज का चित्रण किस प्रकार किया है?

An-कवि रैदास ने अपने पद 'ऐसी लाल तुझ बिन कउन करै' में सामाजिक छुआछूत एवं भेदभाव की तत्कालीन स्थिति का अत्यंत मार्मिक एवं यथार्थ चित्र खींचा है। उन्होंने अपने पद में कहा है कि गरीब एवं दीन-दुखियों पर कृपा बरसाने वाला एकमात्र प्रभु है। उन्होंने ही एक ऐसे व्यक्ति के माथे पर छत्र रख दिया है, राजा जैसा सम्मान दिया है, जिसे जगत के लोग छूना भी पसंद नहीं करते । समाज में निम्न जाति एवं निम्न वर्ग के लोगों को तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखा जाता था, ऐसे समाज में प्रभु ही उस पर द्रवित हुए।
कवि दवारा नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना, सैन आदि संत कवियों का दिया गया उदाहरण दर्शाता है कि लोग निम्न जाति के लोगों के उच्च कर्म पर विश्वास भी मुश्किल से करते थे। इसलिए कवि को उदाहरण देने की आवश्यकता पड़ी। इन कथनों से तत्कालीन समाज की सामाजिक विषमता की स्पष्ट झलक मिलती है।

7Q-रैदास के प्रभु में वे कौन-सी विशेषताएँ हैं जो उन्हें अन्य देवताओं से श्रेष्ठ सिद्ध करती हैं?

- An-
  - वे केवल झूठी प्रशंसा या स्तुति नहीं चाहते।
  - वे जाति प्रथा या छुआछुत को महत्व नहीं देते। वे समदर्शी हैं।
  - उनके लिए भावना प्रधान है। वे भक्त वत्सल हैं।
  - दीन दुखियों व शोषितों की विशेष रूप से सहायता करते हैं। वे गरीब नवाज हैं।
  - वे किसी से डरते नहीं हैं, निडर हैं।

परियोजना कार्य(Activity)

- प्रश्न-कविता के प्रथम पद पर आधारित चित्र प्रस्तुत करें |(Art Integration)
- पद में वर्णित किसी भी पौराणिक कथा को अपने शब्दों मे लिखिए |

धन्यवाद